चमकप्रश्नः

अग्ना विष्णू सजोष
सेमा वर्धन्तु वां
गिरः
द्युम्नैर् वाजे भिरा
गतम्

१ वाज श्चमे
प्रसव श्चमे
प्रयति श्चमे
प्रसिति श्चमे
धीति श्चमे
क्रतु श्चमे
स्वर श्चमे
श्लोक श्चमे
श्राव श्चमे
श्रुति श्चमे
ज्योति श्चमे
सुव श्चमे
प्राण श्चमे
ऽपान श्चमे
व्यान श्चमे
ऽसु श्चमे
चित्तं च म आधीतं
चमे
वाक् चमे
मन श्चमे

चक्षु श्चमे
श्रोत्रं चमे
दक्ष श्चमे
बलं च म ओज श्चमे
सहश् च म आयु
श्चमे
जरा च म आत्मा
चमे
तनू श्चमे
शर्म चमे
वर्म चमेऽङ्गानि चमे
ऽस्थानि चमे
परूꣳ षि चमे
शरी राणि चमे

२ ज्यैष्ठ्यं च म
आधि पत्यं चमे
मन्यु श्चमे
भाम श्चमे
ऽम श्चमे
ऽम्भ श्चमे
जेमा चमे
महिमा चमे
वरिमा चमे
प्रथिमा चमे
वर्ष्मा चमे
द्राघुया चमे
वृद्धं चमे

वृद्धि श्चमे
सत्यं चमे
श्रद्धा चमे
जगच्चमे
धनं चमे
वश श्चमे
त्विषि श्चमे
क्रीडा चमे
मोद श्चमे
जातं चमे
जनिष्य माणं चमे
सूक्तं चमे
सुकृतं चमे
वित्तं चमे
वेद्यं चमे
भूतं चमे
भविष्यच्चमे
सुगं चमे
सुपथं च म ऋद्धं च
म ऋद्धि श्चमे
क्लृप्तं चमे
क्लृप्ति श्चमे
मति श्चमे
सुमति श्चमे

३ शं चमे
मय श्चमे

प्रियं चमेऽनु काम
श्चमे
काम श्चमे
सौ मनस श्चमे
भद्रं चमे
श्रेय श्चमे
वस्य श्चमे
यश श्चमे
भग श्चमे
द्रविणं चमे
यन्ता चमे
धर्ता चमे
क्षेम श्चमे
धृति श्चमे
विश्वं चमे
मह श्चमे
संविच्चमे
ज्ञात्रं चमे
सू श्चमे
प्रसू श्चमे
सीरं चमे
लयश्च म ऋतं
चमेऽमृतं
चमेऽयक्ष्मं चमे
ऽना मयच्चमे
जीवातु श्चमे

दीर्घा युत्वं चमे
ऽनमित्रं चमे ऽभ
यं चमे
सुगं चमे
शयनं चमे
सूषा चमे
सुदिनं चमे

४ ऊर्क्चमे
सूनृता चमे
पय श्चमे
रस श्चमे
घृतं चमे
मधु चमे
सग्धि श्चमे
सपीति श्चमे
कृषि श्चमे
वृष्टि श्चमे
जैत्रं च म औद् भिद्यं
चमे
रयि श्चमे
राय श्चमे
पुष्टं चमे
पुष्टि श्चमे
विभु चमे
प्रभु चमे
बहु चमे
भूय श्चमे

पूर्णं चमे
पूर्ण तरं चमे ऽक्षिति
श्चमे
कूयवा श्चमे ऽन्नं चमे
ऽक्षुच्चमे
व्रीहिय श्चमे
यवा᳚ श्चमे
माषा᳚ श्चमे
तिला᳚ श्चमे
मुद्गा श्चमे
खल्वा᳚ श्चमे
गोधूमा᳚ श्चमे
मसुरा᳚ श्चमे
प्रियंगव श्चमेऽणव
श्चमे
श्यामाका᳚ श्चमे
नीवारा᳚ श्चमे

५ अश्मा चमे
मृत्तिका चमे
गिरय श्चमे
पर्वता श्चमे
सिकता श्चमे
वनस् पतय श्चमे
हिरण्यं चमे ऽय श्चमे
सीसं चमे
त्रपु श्चमे
श्यामं चमे

07-camakam-S 1 060330

लोहं चमे
ऽग्निश् च म आप
श्चमे
वीरुधश् च म ओष
धय श्चमे
कृष्ट पच्यं चमे
ऽकृष्टपच्यं चमे
ग्राम्या श्चमे
पशव आरण्याश् च
यज्ञेन कल्पन्तां
वित्तं चमे
वित्ति श्चमे
भूतं चमे
भूति श्चमे
वसु चमे
वसति श्चमे
कर्म चमे
शक्ति श्चमे ऽर्थश् च
म एमश् च म
इति श्चमे
गति श्चमे

६ अग्निश्च म इन्द्र
श्चमे
सोमश् च म इन्द्र
श्चमे
सविता च म इन्द्र
श्चमे

सरस्वती च म इन्द्र
श्चमे
पूषा च म इन्द्र श्चमे
बृहस्पतिश् च म
इन्द्र श्चमे
मित्रश् च म इन्द्र
श्चमे
वरुणश् च म इन्द्र
श्चमे
त्वष्टा च म इन्द्र
श्चमे
धाता च म इन्द्र
श्चमे
विष्णुश् च म इन्द्र
श्चमे
ऽश्विनौ च म इन्द्र
श्चमे
मरुतश् च म इन्द्र
श्चमे
विश्वे चमे
देवा इन्द्र श्चमे
पृथिवी च म इन्द्र
श्चमे
ऽन्तरीक्षं च म इन्द्र
श्चमे
द्यौश् च म इन्द्र श्चमे
दिशश् च म इन्द्र
श्चमे

मूर्धा च म इन्द्र श्चमे
प्रजापतिश् च म
इन्द्र श्चमे

७ अग्ं शु श्चमे
रश्मि श्चमे ऽदाँभ्यश्
च मेऽधि पतिश्
च म उपाग्ं शुश्
च मेऽन्तर्
यामश् च म ऐन्द्र
वाय व श्चमे
मैत्रा वरुणश् च म
आश्विनश् च मे
प्रति पस्था न श्चमे
शुक्र श्चमे
मन्थी च म आग्र
यण श्चमे
वैश्व देव श्चमे
ध्रुव श्चमे
वैश्वा नरश् च म
ऋतु ग्राहा श्चमे
ऽतिग्राह्याँ श् च म
ऐन्द्रा ग्न श्चमे
वैश्व देवा श्चमे
मरुत् वतीयाँ श्चमे
माहेन्द्र रश् च म
आदित्य श्चमे
सावित्रश् च मे

सारस् वत श्चमे
पौष्ण श्चमे
पात्नी वत श्चमे
हारियो जन श्चमे

८ इध्म श्चमे
बर्हि श्चमे
वेदि श्चमे
धिष्णि या श्चमे
स्रुच श्चमे
च म सा श्चमे
ग्रावा ण श्चमे
स्वर वश्च म उपर
वाश् च मेऽधिष
वणे चमे
द्रोण कलश श्चमे
वायव् यानि चमे
पूत भृच्चमे
आधवनी यश्च म
आग्नीँ ध्रं चमे
हविर् धानं चमे
गृहा श्चमे
सद श्चमे
पुरोडा शाँ श्चमे
पचता श्चमे ऽवभृ थ
श्चमे
स्वगा कार श्चमे

९ अग्नि श्चमे
धर्मश् च मेऽर्क श्चमे
सूर्य श्चमे
प्राण श्चमेऽश्व मेध
श्चमे
पृथिवी चमेऽ दिति
श्चमे
दिति श्चमे
द्यौ श्चमे
शक्वरी रङ्गुलयो दिश
श्चमे
यज्ञेन कल्पन्ताम्
ऋक् चमे
साम चमे
स्तोम श्चमे
यजु श्चमे
दीक्षा चमे
तपश्च म ऋतु श्चमे
व्रतं चमेऽहो रात्र योँर्
वृष्ट्या बृहद् रथन्
तरे चमे
यज्ञेन कल्पेताम्

१० गर्भाँ श्चमे
वत्सा श्चमे
त्रवि श्चमे
त्रवी चमे
दित्यवाट् चमे

दित्यौही चमे
पञ्चावि श्चमे
पञ्चावी चमे
त्रिवत्स श्चमे
त्रिवत्सा चमे
तुर्यवाट् चमे
तुर्यौही चमे
पष्ठ वाट् चमे
पष्ठौ ही च म उक्षा
चमे
वशा च म ऋषभ
श्चमे
वेह श्चमे ऽनड्वाञ्
चमे
धेनुश् च म आयुर्
यज्ञेन कल्पतां
प्राणो यज्ञेन कल्पता
मपानो यज्ञेन कल्पतां
व्यानो यज्ञेन कल्पतां
चक्षुर् यज्ञेन कल्पताग्ं
श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां
मनो यज्ञेन कल्पतां
वाग् यज्ञेन कल्पता
मात्मा यज्ञेन कल्पतां
यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्

एका चमे
तिस्र श्चमे

07-camakam-S 2 060330

पञ्च चमे
सप्त चमे
नव च म एका दश
चमे
त्रयो दश चमे
पंच दश चमे
सप्त दश चमे
नव दश च म
एक विगं शति श्चमे
त्रयो विगं शति श्चमे
पंच विगं शति श्चमे
सप्त विगं शति श्चमे
नव विगं शतिश् च म
एक त्रिगं शच्चमे
त्रयस् त्रिगं शच्चमे
चतस् र श्चमे
ऽष्टौ चमे
द्वादश चमे
षो डश चमे
विगं शति श्चमे
चतुर् विगं शति श्चमे
ऽष्टा विगं शति श्चमे
द्वा त्रिगं शच्चमे
षट् त्रिगं शच्चमे
चत् वरिगं शच्चमे
चतुश् चत् वारिगं
शच्चमे
ऽष्टा चत् वारिगं शच्चमे

वाजश्च प्रस वश्चा
पिजश्च क्रतुश्च
सुवश्च मूर्धा च
व्यश्नियश् चान्त्या
यनश्
चान्त् यश्च भौ वनश्च
भुव नश्चा धिप तिश्च

इडा देवहूर् मनुर्
यज्ञनीर्
बृहस्पति रुक्था
मदानि शगं
सिषद् विश्वे देवाः
सूक्त वाचः
पृथि वीमा तर्मा मा
हिंसीर्
मधु मनिष्ये मधु
जनिष्ये
मधु वक्ष्यामि मधु
वदिष् यामि
मधु मतीं
देवेभ्यो वाच मुद्या
सगं
शुश्रू षेण्यां
मनुष्ये भ्यस्तं मा
देवा
अवन्तु शोभायै

पितरोऽनु मदन्तु

ॐ शान्ति शान्ति
शान्तिः

07-camakam-S 3
060330